अमर उजाला

प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 27 अप्रैल 2019

दुनिया के लोग शांति, स्थिरता, न्याय और सहयोग पाने की आकांक्षा रखते हैं...

...ट्रान डुक लुओंग, *वियतनाम के राजनेता*

अधिकारियों के बाद अब सेना में बतौर सैनिक महिलाओं के लिए दरवाजे खोलना एक बड़ा बदलाव है, जिससे आने वाले दिनों में सेना में महिलाओं की भूमिकाएं और बढ़ेंगी।

अब महिला सैनिक

महिलाओं को बतौर सैनिक भर्ती करने की प्रक्रिया की शुरुआत भारतीय सेना की एक स्वागतयोग्य शुरुआत है, जो उसकी तस्वीर बदल देगी। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती भूमिका को देखते हुए सेना में महिला सैनिकों की भर्ती करने पर पिछले काफी समय से विचार हो रहा था, जिसे रक्षा मंत्रालय ने विगत जनवरी में मंजूरी दी। जिस सैन्य पुलिस या पीबीओआर (पर्सनल बिलो ऑफिसर रैंक) के पद पर महिलाओं की भर्ती प्रक्रिया शुरू हुई है, उनका मूल काम जवानों की आवाजाही और साज-ओ-सामान ढोने की प्रक्रिया को संचालित करना तथा सैन्य प्रतिष्ठानों और छावनी क्षेत्र की देखरेख करना है। महिला सैन्य पुलिस यह काम तो करेगी ही, उसके जिम्मे दुष्कर्म और छेड़छाड़ की जांच की जिम्मेदारी भी रहेगी। इसके अलावा जम्मू-कश्मीर तथा दूसरे अशांत क्षेत्रों में पत्थरबाज और दूसरी आंदोलनकारी महिलाओं की तलाशी तथा गिरफ्तारी में सेना उनकी मदद ले सकेगी। खासकर जम्मू-कश्मीर में महिला सैनिकों की जरूरत पिछले काफी समय से महसूस की जा रही थी। उन सैन्य कॉलोनियों की देखरेख की जिम्मेदारी भी महिला सैनिकों के सुपुर्द किए जाने की बात की जा रही है, जहां सैनिकों के परिवार रहते हैं। साफ दिखाई देता है कि समय बदलने के साथ-साथ सेना में महिलाओं की भूमिका किस तरह बढ़ रही है। वर्ष 1993 में सेना ने पहली बार महिलाओं के लिए दरवाजे खोले थे, पर तब उनकी नियुक्ति मेडिकल, सिग्नल, शिक्षा, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्र में सिर्फ अधिकारियों के तौर पर होती थी, वह भी शॉर्ट सर्विस कमीशन के जरिये। बाद में कुछ क्षेत्रों में इन्हें स्थायी कमीशन दिया गया। अब सैन्य पुलिस के रूप में महिलाओं की भर्ती की शुरुआत कर भारत जर्मनी, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों की श्रेणी में आ गया है, जहां महिला सैनिक हैं। सेना के तीनों अंगों में महिलाओं

की मौजूदगी बेशक अभी कम है; अभी थलसेना में 3.80 फीसदी, वायुसेना में 13.09 प्रतिशत और नौसेना में छह फीसदी महिलाएं हैं। पर वायुसेना और नौसेना में क्रमशः फाइटर पायलट और एसएसजी वुमन पायलटों को प्रशिक्षण दिया जाने लगा है, तो सेना में साइबर सुरक्षा के अलावा युद्ध क्षेत्र के लिए महिला सैनिकों की भर्ती करने पर विचार किया जा रहा है, जो बताता है कि आने वाले दिनों में सेना में महिलाओं की भूमिका और बढ़ने वाली है।

जाति और आकांक्षाओं का मिश्रण

गठबंधन के भीतर निहित अंतर्विरोध ने उसे प्रभावी उपकरण बनने से रोक दिया, अन्यथा ऐसा हो सकता था। इसलिए गठबंधन भाजपा को बिहार में बेशक टक्कर दे रहा है, पर जैसी अपेक्षा पहले की गई थी, वह वैसा बेहतर प्रदर्शन करता नहीं दिख रहा है।

जयपुर हवाई अड्डे पर मेरी जांच करने वाली महिला सुरक्षाकर्मी से मैंने पूछा, राजस्थान में चुनाव प्रचार कैसा चल रहा है, तो उसने मुझे बताया कि वह बिहार से है। फिर मैंने उससे पूछा कि बिहार में चुनाव में क्या हो रहा है, तो उसने कहा कि हम अब चाहते हैं कि कन्हैया कुमार जैसे युवा राजनीति में आएं। उसका जवाब सुनकर मैं हैरान रह गई। राजस्थान में तैनात एक बिहारी महिला पुलिसकर्मी अपने राज्य में नए किस्म का नेतृत्व चाहती है! क्या वह आकांक्षी थी, जो अपने अतीत से छुटकारा चाहती थी?

बेगूसराय निर्वाचन क्षेत्र में गांव की धूल भरी सड़कों पर लोग कन्हैया की एक झलक पाने के लिए इंतजार कर रहे थे, हालांकि उस ग्रामीण इलाके में अंधेरा होने लगा था। कन्हैया कुमार को उनके विरोधी 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' का सदस्य बताते हैं। पर उनके पैतृक स्थान में ऐसा नहीं माना जाता। वहां उन्हें 'बेगूसराय का लाल' कहा जाता है। आंगनवाड़ी में काम करने वाली मां के बेटे ने अपनी अच्छी छवि बनाई है, चाहे लोग उन्हें वोट दें या नहीं। वह स्थानीय बनाम बाहरी का कार्ड खेल रहे हैं और बिना नाम लिए गिरिराज सिंह को बाहरी बताते हैं। इस बार बेगूसराय में भाजपा का चेहरा गिरिराज सिंह हैं, वह भी भूमिहार जाति से हैं। लेकिन लोग खुलेआम बताते हैं कि हम मोदी को वोट दे रहे हैं, गिरिराज तो गौण हैं। कन्हैया का महत्व उसके बिहारी जीन और भूमिहार डीएनए से आगे जाता है, और उनकी विचारधारा के आधार ने उन्हें राजनीतिक रूप से परिपक्व बना दिया है। मुहावरेदार भाषण की उनकी कला उन्हें आम लोगों से जोड़ती है। वह एक मंदिर के किनारे रुक जाते हैं और वहां सड़क किनारे खड़ी महिलाओं के चरण छूकर उनसे आशीर्वाद मांगने लगते हैं। वह कभी नहीं कहते कि मुझे वोट दीजिए, लेकिन अपने संक्षिप्त भाषणों में मुद्दों की बात करते हैं। वह स्थानीय युवाओं के लिए आइकन बन गए हैं।

नीरजा चौधरी
वरिष्ठ पत्रकार

बिहार की राजनीति आज आकांक्षाओं और जाति की मजबूत पकड़ का

मिश्रण है, जिससे वफादारी बंधी हुई है और इससे लोगों को सुरक्षा मिलती है। इसलिए अगर उन्हें अपनी जाति भूमिहार (जिसकी संख्या चार लाख है) के वोट बड़ी संख्या में नहीं मिलेंगे, तो उसका लाभ भाजपा को हो सकता है। मुस्लिम मतदाता हालात को बहुत ध्यान से देख रहे हैं। अगर कन्हैया को भारी जनसमर्थन मिलता है, तो वे उन्हें ही वोट देंगे, अन्यथा राजद उनके लिए पसंदीदा विकल्प है। लेकिन कन्हैया कुमार को जितना अधिक समर्थन मिलेगा, उतना ही गठबंधन के समर्थन में कटौती की संभावना है और यह गिरिराज सिंह को जनसमर्थन पाने में सक्षम बना सकता है। कई बिहारियों का मानना है कि कन्हैया को गठबंधन का उम्मीदवार होना चाहिए था, तब वह भाजपा को अच्छी टक्कर दे सकते थे। तेजस्वी के उभार को देखते हुए लालू यादव नहीं चाहेंगे कि कोई दूसरा सितारा बिहार में उभरे, जो विपक्ष की जगह हथिया ले, जबकि तेजस्वी अच्छा काम कर रहे हैं और पार्टी पर अपनी पकड़ मजबूत बना रहे हैं।

और यहीं पर मुश्किल थी। गठबंधन के भीतर निहित अंतर्विरोध ने उसे प्रभावी उपकरण बनने से रोक दिया, अन्यथा ऐसा हो सकता था। इसलिए गठबंधन भाजपा को बिहार में बेशक टक्कर दे रहा है, पर जैसी अपेक्षा पहले की गई थी, वह वैसा बेहतर प्रदर्शन करता नहीं दिख रहा है। तेजस्वी राजनीतिक रूप से कुशाग्र हैं और त्वरित राजनीतिक प्रतिक्रिया देते हैं, लेकिन महागठबंधन भाजपा की तरह सुसंगठित नहीं है। लालू की अनुपस्थिति को 2019 के समर में याद किया जा रहा है।

महागठबंधन को मुस्लिम और यादवों (माई) का समर्थन मिल रहा है। 2014 में कुछ यादव भाजपा के पाले में चले गए थे, लेकिन इस बार वे लालू की पार्टी के पक्ष में मजबूती से खड़े दिखते हैं। हाल ही में राबड़ी देवी ने आरोप लगाया है कि उन्हें और उनके परिवार को जेल में लालू यादव से मिलने नहीं दिया जा रहा है और लालू को जहर देने की कोशिश की गई थी। इससे यादवों की भावना राजद के पक्ष में ही जाएगी।

बिहार में इस बार के चुनाव की कुंजी अत्यंत पिछड़ी जातियों (ईबीसी) के पास है। अलग-अलग रूप में उनकी संख्या कम है, लेकिन एकजुट होने पर वे राज्य की आबादी का 32 फीसदी हिस्सा हैं। वे किसी एक नेता के पक्ष में नहीं हैं। आज सभी पार्टियां उन्हें लुभाने में लगी हैं। और बिहार के इतिहास में पहली बार 11 अत्यंत पिछड़ी जाति के लोगों को टिकट दिया गया है।

अपने माई समीकरण को विस्तार देने के लिए महागठबंधन ने इस बार उपेंद्र कुशवाहा की आरएलएसपी, मल्लाह समुदाय का समर्थन पाने के लिए मुकेश साहनी की वीआईपी पार्टी और मुसहरों का समर्थन पाने के लिए जीतनराम की हम पार्टी को शामिल किया है। इन पंक्तियों की लेखिका ने पिछले तीन दशक में बिहार में मुसहरों की जिंदगी में कोई बदलाव नहीं देखा है, हालांकि बिहार की विभिन्न सरकारों ने उनके मुद्दों का समर्थन किया है। लालू यादव के पंद्रह वर्षों के शासन के दौरान वे लालू के पक्ष में रहे, फिर जब नीतीश कुमार ने भाजपा के साथ सरकार बनाई, तो वे नीतीश के पाले में चले गए। यह सवर्ण जातियों, ईबीसी, महादलित, पसमांदा मुस्लिमों का गठबंधन था, जिसने नीतीश को शासन करने में सक्षम बनाया। शराबबंदी की नीति लागू करके नीतीश कुमार ने महिलाओं का समर्थन हासिल किया है। पर आज ईबीसी बंटा हुआ है और महादलित भी। लालू यादव और वास्तव में जदूय ने, जब 2015 के विधानसभा चुनाव में वे साथ थे, तो आरक्षण का कार्ड खेला था और ओबीसी की आशंकाओं को गहरा किया था कि आरक्षण खत्म हो जाएगा। इस बार लालू के ही बेटे तेजस्वी ने आर्थिक रूप से कमजोर तबकों (ईडब्ल्यूएस) को दस फीसदी आरक्षण दिए जाने को अपना हथियार बनाया है और ओबीसी के उस डर को हवा दी है कि ईडब्ल्यूएस आरक्षण देना सरकार का आरक्षण को खत्म करने का पहला कदम है। यह विचार यादवों और छोटी पिछड़ी जातियों के समर्थन को मजबूत बना रहा है।

सतह पर कन्हैया कुमार जैसे युवा का किसी बड़ी पार्टी का हिस्सा बनना आसान है, पर दूसरी तरफ सीपीआई जैसी छोटी पार्टी का हिस्सा बनकर उन्हें मुद्दों की राजनीति करने के लिए ज्यादा स्वतंत्रता और लचीलापन मिल सकता है, जिन्हें वह दीर्घकाल की राजनीति का औजार बनाना चाहते हैं।

उम्मीद है इस बार वर्ल्ड चैंपियनशिप में मौका मिले

अपनी कहानी

>> पी.यू. चित्रा

दोहा में 23वीं एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 15 सौ मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक जीतना मेरे लिए दोहरी खुशी का मौका है। एक तो मैं 2017 में मिला अपना खिताब बचाने में कामयाब हुई। इसके अलावा मैंने जकार्ता की हार का बदला लिया।

मेरा घर केरल के पलक्कड़ जिले के मुंदुर में है। हमारा गांव प्राकृतिक रूप से बेहद खूबसूरत है। यहां से 20 किलोमीटर की दूरी पर ही विशाल मलमपुझा बांध स्थित है। गांव के दूसरे बच्चों की तरह ही मेरा बचपन बीता है। हम चार भाई-बहन हैं, जिनमें मैं तीसरे नंबर की हूं। मेरे पिता उन्नीकृष्णन और मां वसंत कुमारी दोनों ही खेतिहर मजदूर हैं, लेकिन उन्होंने हम सब भाई-बहनों की परवरिश में अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी है। आज मैं रेलवे में नौकरी कर रही हूं। मगर कई बार ऐसे भी मौके आते थे, जब माता-पिता के पास कोई काम नहीं होता था और हमें बचा-खुचा खाना खाकर सोना पड़ता था। लेकिन इससे मेरा हौसला कमजोर नहीं पड़ा।

रोज 25 रुपये मिलते थे

मैंने स्कूल की पढ़ाई मुंदुर से ही की है। खेल की वजह से ही मुझे मुंदुर हायर सेकंडरी स्कूल में पढ़ने का अवसर मिला। यह डे बोर्डिंग स्कूल था, जहां मुझे केरल स्पोर्ट्स काउंसिल की ओर से रोजाना पच्चीस रुपये मिलते थे। इसके अलावा भारतीय खेल प्राधिकरण की ओर से छह सौ रूपये महीने भी मिलते थे, जिससे मैं पढ़ाई और खेल के बीच संतुलन बनाने में सफल हुई।

उपहार में मिली नैनो कार

वर्ष 2011 को मैं अपने जीवन का एक निर्णायक मोड़ कह सकती हूं। उस वर्ष नेशनल स्कूल गेम्स महाराष्ट्र के पुणे में हुए थे। इसमें मैंने 1,500 मीटर, 3,000 मीटर और 5,000 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक और तीन किलोमीटर की क्रॉस कंट्री दौड़ में कांस्य पदक जीता था। उस वक्त मैं 16 वर्ष की थी। इसके अगले ही वर्ष 2012 में मैंने केरल स्टेट स्कूल गेम्स में 1,500 मीटर, 3,000 मीटर और 5,000 मीटर की दौड़ में स्वर्ण पदक जीता। अच्छे प्रदर्शन के साथ ही मुझ पर इसे कायम रखने का दबाव भी बढ़ता जा रहा था। 2013 में उत्तर प्रदेश के इटावा में और 2016 में रांची में हुए नेशनल स्कूल गेम्स में मैंने इन तीनों स्पर्धाओं के साथ ही तीन किलोमीटर क्रॉस कंट्री दौड़ में भी स्वर्ण पद जीतकर अपना प्रदर्शन बेहतर किया। मेरी इस सफलता पर उत्तर प्रदेश विधान परिषद ने नैनो कार देकर मुझे सम्मानित किया था।

अधूरा सपना

2017 में लंदन में हुई वर्ल्ड एथलीट मीट में भारतीय दल के लिए मेरा चयन नहीं किया गया था। जबकि मैं अच्छा प्रदर्शन कर रही थी। मैंने एथलीट फेडरेशन ऑफ इंडिया (एएफआई) से संघर्ष किया। मुझे लोगों का समर्थन मिला। मैंने केरल हाई कोर्ट से अपने हक के लिए गुहार लगाई, जहां अदालत ने मेरे पक्ष में फैसला दिया। इसके बाद एएफआई ने इंटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एथलेटिक्स फेडरेशंस (आईएएएफ) से मुझे शामिल करने का आग्रह किया। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी और आईएएएफ ने उनका आग्रह ठुकरा दिया और वर्ल्ड चैंपियनशिप में पदक जीतने का मेरा सपना अधूरा रह गया। एशियाई एथलेटिक्स चैंपियनशिप में मिली कामयाबी से मैं उत्साहित हूं, लेकिन मैं वर्ल्ड चैंपियनशिप को क्वालीफाई करने के कड़े मानक से थोड़ी दूर रह गई हूं। फिर भी मैं उम्मीद करती हूं कि 27 सितंबर से दोहा में शुरू होने वाले वर्ल्ड चैंपियनशिप में इस बार मुझे भारत का प्रतिनिधित्व करने का जरूर मौका मिलेगा।

-दोहा में 15 सौ मीटर दौड़ में स्वर्ण पदक पाने वाली खिलाड़ी के विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित

फैक्ट फाइल

खसरे का प्रकोप

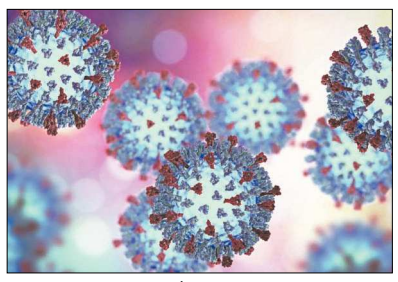

>> खसरे का वायरस

डब्ल्यूएचओ के अनुसार दुनिया में खसरे से पीड़ित देशों में भारत तीसरे स्थान पर है।

अमेरिका में एक बार फिर से खसरे का प्रकोप दिखने लगा है। यह चौंकाने वाला है, क्योंकि इस रोग को वहां पर 2000 में देशव्यापी रूप से समाप्त कर देने की घोषणा कर दी गई थी। राज्य और स्थानीय स्वास्थ्य विभागों के आंकड़ों के मुताबिक इस साल 695 से ज्यादा मामले सामने आए हैं। इससे पहले 2014 में आई रिपोर्ट में इन मामलों की संख्या 667 थी। खसरा वायुजनित रोग है, जो विशेष रूप से मोर्बिलीवायरस के जीन्स पैरामिक्सोवायरस से उत्पन्न होता है। इसके वायरस खांसी, छींक व सांस लेने के दौरान फैलते हैं। ऐसे लोग जो संक्रमित व्यक्ति के आसपास रहते हैं और जिनमें रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, वे इसकी चपेट में जल्दी आ जाते हैं। यह संक्रमण औसतन 14 दिनों तक प्रभावी रहता है। इससे संक्रमित व्यक्ति को बुखार, खांसी, बहती हुई नाक, लाल आंखें और एक सामान्यीकृत चकत्ते के साथ 2-4 दिन पहले से दाने निकलने की शुरुआत हो जाती है, और अगले 2-5 दिनों तक इससे संक्रमित रहता है। वर्ष 1912 में अमेरिका की यह राष्ट्रीय बीमारी बन गई। अमेरिका में इसकी चपेट में आकर मरने वालों की संख्या प्रतिवर्ष छह हजार तक पहुंच गई थी। कई शोध के बाद 1960 के दशक में, वे उस वायरस को एक टीके में बदलने में सक्षम हो गए। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक 2019 में दुनिया भर में खसरे के मामलों में वृद्धि हुई है। जनवरी से अप्रैल के बीच भारत में इसके 7,246 मामले सामने आए हैं।

सौ साल बाद एलिस का मूल्यांकन

घूमती तस्वीरों के दौर में फ्रेंच महिला फिल्मकार एलिस गाई ने ज्वलंत विषयों पर फिल्में बनाई थीं।

व्यूयॉर्क टाइम्स के लिए एलिजाबेथ व्हिजमैन

जब आप क्लासिक फिल्मों के दिग्गजों के नाम पर विचार करते हैं, तब आपके दिमाग में किसका नाम आता है? इतना तय है कि फ्रेंच फिल्मकार एलिस गाई ब्लेक का नाम उसमें नहीं होगा, जो शुरुआती फिल्मकार थीं। हाल तक एलिस का जिक्र ज्यादातर फुटनोट में होता था : पहली महिला फिल्म निर्माता के तौर पर उन्हें याद तो किया जाता था, पर एक प्रभावी फिल्मकार के रूप में उनके महत्वपूर्ण योगदान की अनदेखी कर दी जाती थी। जबकि 1896 में अपनी फिल्म यात्रा की शुरुआत करने के बाद दृश्यबंध तथा विषयवस्तु की सीमा का निरंतर अतिक्रमण करते हुए उन्होंने लगभग 1,000 फिल्में बनाईं। फिल्मों में उन्होंने ध्वनि, रंग और विशेष प्रभाव के क्षेत्र में प्रयोग किए, तो लिंग, नस्ल और वर्ग की खोज की। उन्होंने सर्गेई आइसेंस्टाइन और अल्फ्रेड हिचकॉक जैसे भविष्य के फिल्म दिग्गजों को प्रेरित भी किया।

अब हॉलीवुड में महिलाओं की भूमिका का व्यापक मूल्यांकन करने के क्रम में उनकी विरासत को फिर से खंगाला जा रहा है। इसी सप्ताहांत में

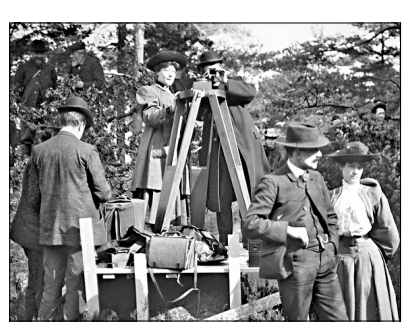

रिलीज हो रही पामेला ग्रीन की नई डॉक्यूमेंटरी, *बी नेचुरल : द अनटोल्ड स्टोरी ऑफ एलिस गाई ब्लेक* उस महान फिल्मकार द्वारा आखिरी फिल्म बनाने के लगभग सौ साल बाद उनका नए सिरे से मूल्यांकन करती है। ग्रीन कहती हैं कि वर्ष 2000 में उन्होंने सुसान तथा क्रिस्टोफर कोच की टीवी डॉक्यूमेंटरी, *रील मॉडल्स* में एलिस गाई का नाम सुना। 'मैं उनका काम देखकर हैरान रह गईं। मुझे आश्चर्य होता है कि प्रारंभिक दौर की इतनी अच्छी फिल्मकार होने के बावजूद उनका नाम लोगों की जुबान पर क्यों नहीं है', ग्रीन कहती हैं। 'लंबे समय से यह धारणा बनी हुई है कि फिल्म निर्माण पुरुषों का काम है। इस सोच ने अनेक महिला फिल्मकारों का अवमूल्यन किया है, एलिस गाई का तो इससे भारी नुकसान हुआ है,' फिल्म इतिहासकार शैली स्टांप कहती हैं।

वर्ष 1873 में पैदा हुईं एलिस गाई की मां फ्रेंच थीं, जबकि पिता एक बौद्धिक थे, जो फ्रेंच थे, पर चिली के वैलपराइसो और सैंटियागो में उनकी किताब की दो दुकानें थीं। जब एलिस गर्भ में थीं, तब उनकी मां ने चिली से नाव से फ्रांस जाने का फैसला किया, ताकि उनकी बेटी फ्रांस में पैदा हो। फ्रांस में रहते हुए पढ़ाई पूरी करने के बाद एलिस लिइन गोमोन्ट के दफ्तर में स्टेनोग्राफर बन गईं।। गोमोन्ट और ल्यूमेयर बंधु तब घूमती तस्वीरें बनाने और उनके प्रदर्शन में व्यस्त थे। पर एलिस को सिर्फ दृश्यांकन पसंद नहीं आए। उन्होंने गोमोन्ट से गुजारिश की कि वह एक फिल्म के कुछ दृश्यों की कहानी लिखना चाहती हैं। और यहीं से उनका जीवन बदल गया। उन्होंने स्त्री-पुरुष के दोहरेपन पर कॉमेडी फिल्म बनाई, तो रंगभेद के खिलाफ भी कदम उठाए। चौरानबे साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई-यानी उन्होंने अपने जीवन काल में ही अपनी लंबी उपेक्षा देखी। *बी नेचुरल* की कार्यकारी निर्माता जुडी फोस्टर कहती हैं, 'एलिस के जीवन को खोज निकालना एक उत्सव जैसा है। काश, आज वह जीवित होतीं।'

इस हफ्ते के शब्द

योगेंद्र पुराणिक

जापान में विधानसभा का चुनाव जीतकर 41 वर्ष के योगेंद्र पुराणिक ऐसा करने करने वाले पहले भारतवंशी बन गए हैं।

स्टैन (STAN)

इस शब्द को मरियम-वेबस्टर डिक्शनरी में शामिल किया गया है। इसका मतलब होता है, अत्यधिक उत्साही और समर्पित प्रशंसक।

ट्रांसजेंडरों की गिरफ्तारी

73 हजार

से ज्यादा ट्रांसजेंडरों को बीते चार साल में रेल यात्रियों से जबरन वसूली करने के कारण रेलवे सुरक्षा बलों ने गिरफ्तार किया।

सूत्र

>> चेर वांग

कभी-कभी असुविधाएं भी दिखाती हैं नई राह

मेरा जन्म एक बड़े व्यावसायिक परिवार में हुआ। फार्मोसा प्लास्टिक समूह के नाम से मेरे पिता वांग युंग-चिंग ने पेट्रोकेमिकल्स और प्लास्टिक की कंपनी की स्थापना की। जब मैं मात्र पंद्रह वर्ष की थी, तो मुझे अपनी बहन के पास रहने के लिए लास एंजेलिस भेज दिया गया। हालांकि मैं ज्यादा दिन तक वहां नहीं रही, क्योंकि मेरी बहन के पति को डेट्रॉएट में एक नई नौकरी मिल गई। मेरी बहन ने मेरा दाखिला ऑकलैंड के सबसे अच्छे स्कूल में करा दिया। स्कूली शिक्षा के बाद मैं उच्च शिक्षा हासिल करने गई। हालांकि पियानो बजाने के शौक के चलते मैं बर्कले में संगीत में अपना करियर बनाना चाहती थी, लेकिन कुछ कारणों से मैं ऐसा नहीं कर सकी और अर्थशास्त्र का अध्ययन करने लगी। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया से ग्रेजुएट करने के बाद मैंने अपने भाई की कंपनी फर्स्ट इंटरनेशनल कंप्यूटर जॉइन कर ली। वहां मुझे मदरबोर्ड बेचने के लिए यूरोप की यात्रा करनी पड़ती थी। बाद में मैंने एक नया पर्सनल कंप्यूटर ब्रांड लियो कंप्यूटर शुरू किया और उद्यम को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया। लेकिन दुर्भाग्य से लियो कंप्यूटर चला नहीं। लेकिन वह विफलता मेरे उत्साह को खत्म नहीं कर पाई। यूरोप की यात्रा के दौरान मुझे एहसास हुआ कि पर्सनल कंप्यूटर भारी और कहीं ले जाने में असुविधाजनक होते हैं। बस यहीं से मेरे मन में हाथ में पकड़े जाने लायक उपकरण का नया विचार सूझा, जिसे जेब में या ब्रीफकेस में ले जाया जा सके। मैंने अपना यह विचार एक करीबी दोस्त के साथ साझा किया। उसी समय माइक्रोसॉफ्ट के एक परिचित ने मुझसे संपर्क किया, जो विंडोज सीई ऑपरेटिंग सिस्टम का उपयोग करके हाथ में पकड़े जाने वाले उपकरण के निर्माण के लिए निर्माता तलाश रहा था। बस यह मुझे एक अवसर की तरह लगा और मैंने अपने उस दोस्त के साथ एचटीसी कंपनी की शुरुआत की। पहले हमने लैपटॉप बनाया, लेकिन वह उतना नहीं चला, लेकिन हमारे पास पहले से एक और योजना तैयार थी। हमने अन्य कंपनियों के साथ भागीदारी करके मोबाइल फोन बनाया। और इस बार हमारा आइडिया काम कर गया। लेकिन मैं यहीं रुकने वाली नहीं थी। मैं स्मार्टफोन के बाजार में एचटीसी को एक अग्रणी ब्रांड बनाना चाहती थी। और काफी संघर्ष करने के बाद ज्यादा पूंजी लगाकर हमने अपना स्मार्ट फोन बाजार में उतारा। फिर तो जो हुआ, वह इतिहास है।

मन में कुछ कर गुजरने की लगन हो और संकल्प दृढ़ रहे, तो एक न एक दिन सफलता जरूर मिलती है।